Roll No. ..... Total Pages : 7

4384

M.A. (Previous) Examination, 2016

HINDI LITERATURE

Paper – IV

(आधुनिक काव्य)

Time : Three Hours

Maximum Marks : 100

खण्ड-अ [Marks : 20]

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 50 शब्दों से अधिक न हो। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

खण्ड-ब [Marks : 50]

प्रत्येक इकाई से **एक-एक** प्रश्न चुनते हुए, कुल **पाँच** प्रश्न कीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों से अधिक न हो। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

खण्ड-स [Marks : 30]

कोई **दो** प्रश्न कीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 300 शब्दों से अधिक न हो। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

खण्ड-अ

1. सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

इकाई–I

(i) 'मानस मंदिर में सती, पति की प्रतिमा थाप' इस पंक्ति में कौन, कहाँ, किसकी प्रतिमा थाप रहा है?

(ii) 'साकेत' शीर्षक का औचित्य बताइए।

इकाई–II

(iii) 'कामायनी' में कुल कितने सर्ग हैं? प्रथम तथा अंतिम सर्ग के नाम लिखिए।

(iv) 'कौन तुम? संसृति जलनिधि तीर-तरंगों से फैंकी मणि एक।' इस पंक्ति में कौन, किससे, क्या कह रहा है?

इकाई–III

(v) 'समर निंद्य है धर्म राज, पर कहो शांति वह क्या है?' इस पंक्ति में कौन, किससे, क्या कह रहा है?

(vi) 'धिक जीवन जो पाता आया ही विरोध।' पंक्ति का भाव बताइए।

इकाई–IV

(vii) श्रेय नहीं कुछ मेरा मैं तो डूब गया था स्वयं शून्य में।' यह पंक्ति किसने, कब और क्यों कही?

(viii) पूछती है – वह कौन, सुनाई जो देता पर दिखाई नहीं देता।'
यह किस की पंक्ति है और इसमें क्या कहा गया है?

इकाई–V

(ix) द्विवेदीयुगीन कविता की **दो** प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

(x) रहस्यवाद क्या है?

खण्ड-ब

इकाई–I

निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

2. सीस हिला कर दीपक कहता, ''बन्धु !'' वृथा ही तू क्यों दहता?
पर पतंग पड़ कर ही रहता,
कितनी विह्वलता है !
दोनों ओर प्रेम पलता है।
बच कर हाय पतंग मरे क्या?
प्रणय छोड़ कर प्राण धरे क्या?
जले नहीं तो मरा करे क्या?
क्या यह असफलता है?
दोनों ओर प्रेम पलता है।

अथवा

3. डरो मत, अरे अमृत संतान ! अग्रसर है मंगलमय वृद्धि,
पूर्ण आकर्षण जीवन केंद्र, खिंची आवेगी सकल समृद्धि।
देव असफलाओं का ध्वंस प्रचुर उपकरण जुटाकर आज,
पड़ा है बन मानव-सम्पत्ति पूर्ण हो मन का चेतन राज।

इकाई–II

4. सच पूछो तो शर में ही बसती है दीप्ति विनय की,
संधि वचन संपूज्य उसी का, जिसमें शक्ति विनय की।
सहनशीलता, क्षमा, दया को तभी पूजता जग है,
बल का दर्प चमकता उसके पीछे जब जगमग है।

अथवा

5. यह अंतिम जप ध्यान में देखते चरण युगल,
राम ने बढ़ाया कर लेने को नील कमल,
कुछ लगा न हाथ, हुआ सहसा स्थिर मन चंचल,
ध्यान की भूमि से उतरे खोले पलक विमल,
देखा, वह रिक्त स्थान, यह जप का पूर्ण समय,
आसन छोड़ना असिद्धि, भर गये नयन द्वय।

इकाई–III

6. वह रहस्यमय व्यक्ति
अब तक न पाई गई मेरी अभिव्यक्ति है,
पूर्ण अवस्था वह
निज संभावनाओं, निहित प्रभावों, प्रतिमाओं की,
मेरे परिपूर्ण का आविर्भाव,
हृदय में रिस रहे ज्ञान का तनाव वह,
आत्मा की प्रतिमा।

अथवा

7. राजा ने अलग सुना
जयदेवी यशः काय
वरमाला लिए गाती थी मंगलगीत
दुन्दुभी दूर कहीं बजती थी।
राजमुकुट सहसा हलाका हो आया था,
मानो हो फूल सिरिस का
ईर्ष्या, महत्त्वाकांक्षा, द्वेष, चाटुता
सभी पुराने लुगदे से झर गए, निखर आया था
जीवन–कांचन
धर्मभाव से जिसे निछावर वह कर देगा।

इकाई–IV

8. "'अंधेरे में' कविता में मुक्तिबोध का आत्मान्वेषक रूप दिखाई देता है।" कथन के संदर्भ में इस कविता की समीक्षा कीजिए।

अथवा

9. "'असाध्य वीणा' को वही साध पाता है जो सत्य एवं स्वयं को शोधता है।" इस कथन के संदर्भ में कविता के भाव-तत्त्व की समीक्षा कीजिए।

इकाई–V

10. प्रगतिवाद के उत्थान एवं पतन के कारणों पर प्रकाश डालिए।

अथवा

11. छायावाद की प्रमुख प्रवृत्तियाँ लिखिए।

खण्ड–स

इकाई–I

12. 'साकेत' के नवम् सर्ग के मूल प्रतिपाद्य पर प्रकाश डालते हुए गुप्त जी की मौलिकता पर विचार कीजिए।

इकाई–II

13. 'कामायनी' के प्रतिपाद्य पर विस्तार से लिखिए।

इकाई–III

14. 'कुरुक्षेत्र' काव्य के संदेश एवं प्रासंगिकता पर विस्तार से लिखिए।

इकाई–IV

15. 'निराला' के राम का चरित्रांकन कीजिए।

इकाई–V

16. प्रयोगवाद की विशेषताएँ लिखते हुए इसके प्रमुख कवियों का परिचय दीजिए।